इकाई 16 जापान में राजनीतिक सुधार

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद:

- जापान के सम्राट की उस प्रारंभिक घोषणा की आपको जानकारी हो सकेगी जिसके द्वारा जनता को राजनीति में भाग लेने की आज्ञा प्रदान कर दी गई,
- आप उस प्रक्रिया को जान सकेंगे जिसके द्वारा बाकू-हान व्यवस्था को नष्ट कर दिया गया था और एक केन्द्रीयकृत नौकरशाही राज्य की स्थापना की गई,
- जनता के आंदोलन, उनके नेतृत्व तथा राजनीतिक प्रक्रिया में प्रतिनिधित्व से संबंधित मांगों के विषय में भी आपको जानकारी हो सकेगी,
- इस आंदोलन के बारे में सरकारी प्रतिक्रियाओं के विषय में आप सीख सकेंगे,
- आपको यह जानकारी होगी की संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना कैसे की गई, और
- आपको यह भी आभास हो जाएगा कि प्रारम्भिक वर्षों में संविधान ने कैसे कार्य किया।

16.1 प्रस्तावना

यह इकाई उन राजनीतिक सुधारों का विवरण प्रस्तुत करती है जिनके कारण जापान में आधुनिक राष्ट्र राज्य की स्थापना हुई। इस इकाई में 1868 से 1889 तक उस समय का विवेचन किया गया है जबकि संविधान को निर्णायक रूप से लागू किया गया। इस काल में जापान का उद्भव एक केन्द्रीकृत प्रशासन के अंतर्गत एक एकीकृत राष्ट्र के रूप में हुआ। इसके अंतर्गत जहां एक ओर राष्ट्रीय एकता शामिल थी वहीं इसने उन क्षेत्रीय वफादारियों को भी समाप्त कर दिया जिनकी अभी तक एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। इन राजनीतिक सुधारों का उद्देश्य जापान को एक ऐसा आधुनिक राष्ट्र बनाना था जो पश्चिमी राष्ट्रों के समान आधुनिक राष्ट्र हो और इस उद्देश्य को बहुत-सी आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं के समाविष्ट के द्वारा प्राप्त किया गया।

अप्रैल, 1868 में सम्राट के द्वारा जारी किये गये शपथ चार्टर में मंत्रणात्मक सभाओं की स्थापना का वायदा किया गया। सार्वजनिक मत के द्वारा किये जाने वाले निर्णयों से स्पष्ट था कि राजनीतिक प्रक्रिया में सार्वजनिक हिस्सेदारी की अनुमति दे दी जाएगी। इस पृष्ठभूमि में लोकप्रिय अधिकारों के आंदोलन ने राष्ट्रीय सभा की स्थापना की मांग को उठाया। जनता की ओर से सरकार पर डाले गये इन दबावों के साथ-साथ संविधान निर्माण के लिए मेजी शासकों के द्वारा प्रारम्भ की गई प्रतिक्रियाओं की अंतिम परिणति 1889 में मेजी संविधान को लागू करने के रूप में हुई। इस तरह से जापान एशिया में एक लिखित संविधान वाला प्रथम राष्ट्र हो गया।

16.2 शपथ चार्टर

जापान के विद्वानों ने मेजी वंश के शासन से पूर्व की कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के इतिहास को संकलित किया है। इनमें से निर्णय लेने के आधार को विस्तृत करने की प्रक्रिया भी थी जिसके द्वारा जनता को भी इस प्रक्रिया में शामिल किया जाना था। तोकूगावा शासकों ने अपने शासन के अंतिम वर्षों में राजनीतिक प्रक्रिया में जनता के और व्यापक समूहों को शामिल किया। इस पृष्ठभूमि के कारण ही मेजी सरकार के लिए यह संभव हो पाया कि साम्राज्यिक वापसी के तुरंत बाद सार्वजनिक मत के द्वारा निर्णय करने के सिद्धांतों की उन्होंने घोषणा कर दी। सम्राट द्वारा उद्घोषित पांच धाराओं के शपथ चार्टर की घोषणा विश्व के सम्मुख अप्रैल, 1868 में उस नये मार्ग के लिए की गई जिसका जापान को अनुसरण के लिए प्रस्ताव किया गया था। ये पांच धाराएं थी :

1) मंत्रणात्मक सभाओं की व्यापक तौर पर स्थापना की जाएगी और राज्य के सभी मामलों का निर्णय आम मत के द्वारा होगा।
2) सभी वर्ग, उच्च या निम्न संयुक्त तौर पर राज्य के मामलों में प्रशासन को संचालित करने में सहयोग करेंगे।
3) सामान्य जन नागरिक सैनिक अधिकारियों से कम महत्वपूर्ण नहीं होंगे। उनको वह करने की अनुमति होगी जो वे करना चाहते हों। राजनीति के प्रति इससे लोगों में उदासीनता नहीं फैलेगी।
4) अतीत की गलत परंपराओं का परित्याग कर दिया जाएगा और प्रत्येक वस्तु स्वर्ग तथा पृथ्वी के कानून पर आधारित होगी।
5) ज्ञान को संपूर्ण विश्व से खोजा जाएगा जिससे कि साम्राज्यिक शासन के आधार बलशाली बन जाएंगे।

इन धाराओं का मौलिक प्रारूप एछिजैन जाति के यूरी किमीमासा के द्वारा तैयार किया गया था और वह तोबूंगावा विद्वान योकोय शोनन से प्रभावित था। इन धाराओं में संवैधानिक संसदात्मक सरकार की संभावनाएं निहित थी। इस घोषणा का उपयोग एक ऐसे आंदोलन के आधार के लिए किया गया जिसके द्वारा जनता की मांग पर राष्ट्रीय सभा की स्थापना की गई हो। इस राष्ट्रीय सभा में सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व होगा और इसके माध्यम से वे अपने भाग्य का फैसला कर सकेंगे।

16.3 बाकू-हान व्यवस्था के उपरान्त का राजनीतिक तंत्र

सन् 1868 में तोकूगावा शासकों के तख्तों को एक साम्राज्यिक गुट के द्वारा उलट देने के बाद, 1868 के संविधान के नाम से प्रसिद्ध एक उद्घोषणा के द्वारा एक नवीन राजनीतिक तंत्र की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत सर्वोच्च राजनीतिक प्रभुत्व के साथ कौंसिल ऑफ स्टेट (दाजोकन) की स्थापना हुई। यह शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त पर आधारित थी। जुलाई 18969 में फिर कुछ परिवर्तन किये गये लेकिन मेजी नेताओं के रूप में सरकार का स्वरूप निर्धारित हो चुका था। 1871 में अपनायी गई मंत्रि परिषद की व्यवस्था को 1885 में लागू कर दिया गया। कौंसिल ऑफ स्टेट या राज्य परिषद को सेंट्रल बोर्ड, राइट बोर्ड तथा लैफ्ट बोर्ड (वान बोर्ड) में विभाजित किया गया। सेन्ट्रल बोर्ड सरकार का सर्वोच्च संगठन था और इसका प्रमुख चांसलर **(दाजो देजिन)** था और इसमें जन प्रतिनिधि भी शामिल होते थे। बाद

में इन जन प्रतिनिधियों (**दायनगों**) का स्थान लैफ्ट तथा राइट के मंत्रियों और अनेकों कौंसिलरों ने ले लिया। लैफ्ट बोर्ड की रचना विधायिका कार्यों को संपन्न करने के लिए की गई थी किन्तु इसने मात्र एक सलाहकार संस्था के रूप में कार्य किया। राइट बोर्ड को विभागों के प्रमुख तथा उनके जन प्रतिनिधियों के द्वारा बनाया गया था। इस समय में विदेशी मामलों के विभाग, वित्तीय, युद्ध, सार्वजनिक कार्य, सामाजिक गृह शिक्षा, शिन्टों और न्यायपालिका जैसे विभागों की रचना की गई। 1873 में गृह विभाग को भी जोड़ा गया। सिद्धांत तौर पर राइट बोर्ड को सेन्ट्रल बोर्ड से अलग कर दिया गया था किन्तु प्रभावशाली कौंसिलरों ने भी विभागों के प्रमुखों के रूप में कार्य किया। नीति निर्माण एवं प्रशासनिक कर्तव्य दोनों मिश्रित हो गये।

सनजो सनेटोमी (1887-1891) और इवाकुरा तोमोमी ने क्रमशः चांसलर के पद तथा राइट के मंत्री का पद ग्रहण किया, लेकिन वास्तविक सत्ता का संचालन चांसलरों के द्वारा ही किया जाता था और ये चांसलर मुख्य रूप से सतसुमा एवं चोसी से होते थे। सतसुमा से सैगो टाकोमारी, ओकूबो तोसीमिची, चोसी से किदो कोयन, इतो हिरोबूमि, इनावो कौरू, यमगाता तै सुके, हिजेन से उनेकूमा, शिगेनोबू तथा टोसा से इतागाकी तै सुके और जोतो शोजिटों मुख्य नेता थे। इन सभी नेताओं ने तोकूगावा शासन को उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

16.3.1 हान की समाप्ति

मात्र प्रशासन में पविर्तन नयी सरकार को शक्तिशाली नहीं बना सकता। केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण में देश का सारा राजस्व नहीं था। केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण में जापान के कृषि उत्पादन का एक चौथाई से भी कम था। शेष राजस्व प्रत्येक हान (डोमेन) के अन्तर्गत था और इसकी स्वायत्तता अभी अबाध तौर पर जारी थी। किदी कोयन ने महसूस किया कि शोगुन की भांति हान को बाध्य किया जाए, जिससे वे अपनी स्वायत्तता को सम्राट के अधीन कर दें। सतसुमा चोसु, तोसा तथा हिजेन से नेताओं ने अपने-अपने स्वामियों को यह मनाने में सफलता प्राप्त कर ली कि वे अपने-अपने राजस्व के अधिकारों को अधिक से अधिक मार्च, 1869 तक सम्राट को वापस करने प्रारंभ कर दें। दूसरे जमींदारों ने भी भय से ऐसा करना शुरू कर दिया वरना उनको सम्राट के प्रति वफादार न समझा जाता। जिन जमींदारों ने ऐसा स्वयं नहीं किया उनको ऐसा करने के लिए बाध्य किया गया। भूतपूर्व जमींदारों को पैतृक हान के तौर पर नियुक्त कर दिया गया और उनको हान की कुल आमदनी का दसवां भाग वेतन के तौर पर दिया जाने लगा। इन भूतपूर्व देम्यो के सामुराइ वर्ग को आमदनी के तौर पर उनके पहले की आमदनी का एक मामूली भाग दिया गया।

हान भूमि को सम्राट को वापस करने की प्रक्रिया को 1870 तक पूर्ण कर लिया गया। हान भूमि को वापस करते समय कुछ दैम्मो जैसे सतसुमा के शयाजू हिसामित्सु को ऐसा समझाया गया कि वे अपनी स्वायत्तता तथा अपनी सेना को अपने पास रख सकेंगे। लेकिन मेजी शासकों की इच्छा यह थी कि हान को पूर्ण रूप से हटाकर उनके स्थान पर सरकार के जिला अधिकारियों को बैठा दिया जाये और उनको केन्द्रीय सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा जाए। इस नीति को कार्यरूप देने के लिए सतसुमा जैसे मामलों में दबावों की आवश्यकता थी शिमाजू हिसामित्सू को सरकार में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, लेकिन उसने इंकार कर दिया। फिर भी उसने शैगो ताकामोरी को सरकार में सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान कर दी। सरकार ने भी एक साम्राज्यिक सेना को सतसुमा चोशू तथा तोसा द्वारा उपलब्ध कराये गये योद्धाओं के द्वारा सरकार को उखाड़ने के प्रयासों का विरोध करने के लिए संगठित किया। अगस्त, 1871 में हान को समाप्त करने की घोषणा की गई और उनके स्थान को सरकार जिला अधिकारियों ने ले लिया और इन अधिकारियों के प्रमुख केन्द्र सरकार द्वारा नामजद किये गये गवर्नर थे। कैसे इतनी सरलता से इन दैम्यों ने अपने अधिकारों का परित्याग कर दिया? उन्होंने बड़ी अनुकूल शर्तों को प्राप्त करने के बाद ही अपने अधिकारों का परित्याग किया। उन शर्तों के अनुसार हान के संचालन में कुछ भी खर्च किये बिना वे हान की आमदनी का दसवां भाग अपने पास रख सकते थे। अनेक हानों को वित्तीय संकट किसानों के बीच असंतोष तथा सामुराइयों के विरोध जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। वास्तव में केन्द्रीय सरकार ने हानों की समस्याओं का समाधान ही किया। इसके बावजूद भी भूतपूर्व दैम्मों को अदायगी का वचन तथा हान की आमदनी पर सामुराई के एक भाग ने सरकार के राजस्व पर अतिरिक्त भार लाद दिया क्योंकि राजस्व का एक तिहाई भाग इन अदायगी के लिए आवंटित किया गया था। हान पर जो भी कर्ज था वह अब सरकार का

उत्तरदायित्व हो गया था। 1871 में हान की समाप्ति के बाद नेताओं के बीच नई सरकार का स्वरूप क्या हो – इसको लेकर काफी मतभेद थे। जहाँ एक ओर सैगो ताकामोसी ऐसी व्यवस्था चाहता था जिसमें सत्ता नियंत्रण शिज़ोकू (भूतपूर्व सामुराइ) के हाथों में हो, वहीं पर ओकूबो तथा किदो ने केन्द्रीकृत नौकरशाही सरकार की स्थापना को प्राथमिकता दी।

एक ऐसा महत्वपूर्ण सुधार किया गया जिसको सामाजिक सुधार की श्रेणी में भी रखा जा सकता है और इस सुधार से देश की राजनीतिक प्रक्रियाओं पर गंभीर परिणाम हुए। वर्ग व्यवस्था के कारण समाज **शी, नो, को शो** (सामुराइ, किसान, कारीगर तथा व्यापारी) जैसे पदानुक्रम में विभाजित था। इस नये सुधार के द्वारा तोकूगावा काल में विद्यमान इस सामाजिक बुराई का अंत कर दिया गया। मेजी सरकार की घोषणा के द्वारा व्यवसाय की स्वतंत्रता की अनुमति प्रदान कर दी गई, सामान्य जनों को अपने पारिवारिक नामों को धारण करने की भी अनुमति प्राप्त हो गई। सामुराइ को जो विशेषाधिकार प्राप्त थे उनको खत्म कर दिया गया। इस सुधार के बावजूद भी सरकार ने 1872 में जनता का वर्गीकरण **काजोकू** (सामतों), **शिजोकू** (सामुराइ का उच्च वर्ग) और **हेमिन** (सामान्य जन) में किया गया। इस वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य वंशानुक्रम की पहिचान करना था। आगे चलकर **काजाकू** वर्ग सामन्तों की नयी व्यवस्था के निर्माण का एक आधार बन गया और इस नयी व्यवस्था को हाऊस ऑफ पीर्स (House of Peers) के नाम से जाना गया।

16.3.2 स्थानीय सरकार

261 **हानों** को समाप्त कर दिया गया और देश को 302 **केन** (प्रशासक पदों) तथा 3 **फू** (राजधानीय प्रशासनिक पदों) में विभाजित किया गया। आगामी वर्षों में इसको और अधिक सुदृढ़ करने के लिए प्रयास किये गये। सन् 1888 तक देश को तीन प्रशासनिक पदों के साथ ओकीनावा को शामिल करते हुए 43 प्रशासनिक पदों में विभाजित कर दिया गया। इन प्रशासनिक क्षेत्रों के गवर्नरों की नियुक्ति तथा उन पर नियंत्रण केन्द्रीय सरकार के द्वारा किया जाता था।

प्रारंभ में अर्थात् 1871 में बहुत से गांवों को एकीकृत किया गया और फिर उनको प्रशासनिक जिलों के अधीन कर दिया गया। इन इकाइयों के प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति केन्द्र के द्वारा की जाती और प्रभावी तौर पर वे नवीन नौकरशाही वर्ग के सदस्य थे। सन् 1878 में जिलों को समाप्त कर दिया गया और संपूर्ण देश को नगरों तथा गांवों के रूप में गठित किया गया तथा ये नगर एवं गाँव प्राथमिक प्रशासनिक इकाई बन गये। सन् 1880 में नगर एवं ग्राम सभाओं की स्थापना की गई। इन सभाओं के सदस्यों का निर्वाचन राष्ट्रीय विधि द्वारा निर्धारित मामलों को करने के लिए किया जाता था।

इसलिए 1880 के आसपास केन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था को स्थापित कर दिया गया था और ऐसा गांव तथा नगर स्तर पर सभाओं की स्थापना के बाद ही संभव हो सका। क्या यह जनप्रिय अधिकारों के लिए आंदोलन का परिणाम था? क्या इन सभाओं को राष्ट्रीय सभा का अग्रदूत कहा जा सकता था?

बोध प्रश्न 1
सही का चिन्ह (√) लगाइये।

1) एशिया में ऐसा कौन सा पहला राष्ट्र था जिसका लिखित संविधान था।

   अ) चीन

   ब) कोरिया

   स) थाइलैंड

   द) जापान

2) अ) मेजी सरकार के समय में राज्य परिषद सेन्ट्रल बोर्ड एवं राज्य सचिवालय नामक दो भागों में विभाजित थी।

   ब) मेजी सरकार के समय में राज्य परिषद सेन्ट्रल बोर्ड, राइट बोर्ड एवं लैफ्ट बोर्ड नाम की तीन संस्थाओं में विभाजित थी।

   स) मेजी सरकार के समय में राज्य परिषद मुख्य तौर पर केंद्र राज्य संबंधों के सिद्धांतों पर आधारित थी।

द) मेजी सरकार के समय में राज्य परिषद सेन्ट्रल बोर्ड, राइट बोर्ड, लैफ्ट बाड एव स्टट बोर्ड जैसे चार भागों में विभाजित थी।

3) हान की समाप्ति कैसे हुई? इस पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

16.4 जनप्रिय अधिकारों के लिए आंदोलन

जनप्रिय अधिकारों के लिए आंदोलन **शिजोक** (उच्च सामुराइ वर्ग) के असंतोष का परिणाम था। यह वर्ग केन्द्र की उस सत्ता में हिस्सेदारी की मांग कर रहा था जिसको सतयुमा-चोशु जाति के द्वारा एकाधिकारकृत कर दिया गया था। उनके साथ ऐसे धनी किसान (ओनो) शामिल हो गये जो सरकार का ध्यान किसानों की समस्या पर केंद्रित करना चाहते थे। इतागाकी तैसुके के नेतृत्व में तोसा गुट इस आंदोलन का केन्द्र था और इतागाकी ने कोरिया के प्रश्न पर (इसकी विस्तृत जानकारी के लिए इकाई-10 को देखें) सरकार को छोड़ दिया था। इतागाकी ने एक छोटे राजनैतिक दल का गठन कर लिया और इस दल में ग्रामीण क्षेत्रों के असंतुष्ट तत्व भी सम्मिलित हो गये। जनवरी, 1874 में इतागाकी, गोतो शोजिसो तथा सोयजिमा तनोयमि के साथ अन्य चार लोगों ने मिलकर राष्ट्रीय सभा की स्थापना की मांग करते हुए सरकार को एक मांग पत्र दिया। उनके तर्क पश्चिमी उदारवाद पर आधारित थे। उन्होंने अपने इस मांग पत्र में अधिकृत निरंकुशवाद का विरोध किया और कहा कि देश की अच्छाई के लिए स्वतंत्र बहस की आज्ञा दी जानी चाहिए। उन्होंने "बिना प्रतिनिधित्व के कोई कर नहीं" के नारे को उठाया और इससे किसानों के उस असंतोष की अभिव्यक्ति हुई जो चावल की शराब पर नये कर लगाने से संबंधित था। इस मांग पत्र में जापान के अंदर राष्ट्रीय सभा के बुलाने की आवश्यकता के विषय में भी बहस कराने की मांग को उठाया गया था। फिर चाहे जनता संसदात्मक सरकार के लिए तैयार थी या नहीं। मेजी सरकार ने परंपरागत पदानुक्रम संस्थाओं के समझौतों को भंग कर और नवीन विचारों के प्रसार को प्रोत्साहित कर राजनीतिक बहस के लिए एक माहौल को तैयार किया। गाँवों के शिक्षित नेताओं के साथ-साथ अन्य दूसरे बुद्धिजीवियों ने ग्रामीण स्कूलों को प्रारम्भ करने, राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना करने, तथा राजनीतिक अधिकारों के विचारों का प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। एक विशिष्ट ग्रामीण परिवार में कोनो हिरोनाका (1849-1923) इस आंदोलन का एक मुख्य नेता था। बुद्धिजीवी तथा पत्रकार, इन विषयों में जनता की रुचि को जगाने के लिए टोक्यो से भाषण यात्रा पर जाते थे।

सरकार की प्रतिक्रिया दो तरह की थी। पहले तो सरकार ने दमनात्मक तरीकों को अपनाया। राजनीतिक आलोचनाओं को सीमित करने के लिए सरकार ने 1875 में प्रेस अधिनियम को लागू कर दिया और गृह मंत्रालय से सेंसरशिप लागू करने तथा हिंसा के लिए भारी जुर्माने लगाने के लिए कहा। अप्रैल, 1880 में राजनीतिक सभाओं तथा संगठनों के ऊपर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। कुछ अन्य प्रकार के सकारात्मक कदमों को भी उठाया गया। सभाओं को शहरों, कस्बों एवं ग्रामों में स्थापित किया गया। ये सभायें मेयरों एवं गांवों के प्रमुखों का चुनाव करती थी। सभा के एक तिहाई सदस्यों को प्रत्यक्ष निर्वाचन के अंतर्गत चुना जाता। एक अन्य उपाय के तहत मेयर के पद को अवैतनिक बना दिया गया। गरीबों को इस राजनीतिक प्रक्रिया से बिल्कुल अलग रखा गया। प्रशासनिक क्षेत्र की सभा के सदस्यों को नगर, कस्बा तथा ग्राम के उन सम्मानीय लोगों के मध्य से चुना जाता था जो दस चेन से

अधिक राष्ट्रीय कर अदा करते थे। जिस समय बाद में राष्ट्रीय सभा का गठन किया गया तब भी मतदाता सूची में केवल धनी लोगों को शामिल करने का सिद्धांत लागू रहा। जनप्रिय अधिकारों के आंदोलन की आलोचना की प्रतिक्रिया में सरकार ने किदो तथा इतागाकी नामक नेताओं को 1875 में सरकार में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। इसके साथ ही सरकार ने राजनीतिक आधार विस्तृत करने के लिए सुधारों का वायदा भी किया। इस सबके बावजूद भी कोई वास्तविक राजनीतिक सुधार नहीं लागू किये गये। परिणामस्वरूप किदो तथा इतागाकी ने त्यागपत्र दे दिये। सैगो ताकामोरी की कोरिया पर आक्रमण करने की योजना को 1873 में नकार दिया गया और परिणामस्वरूप उसने सरकार से त्यागपत्र दे दिया। इसी के साथ उसने 1877 में सरकार के खिलाफ विद्रोह में सामुराइयों का प्रतिनिधित्व भी किया। ये सामुराइ अपने विशेषाधिकारों के छिनने के कारण सरकार से असंतुष्ट थे। इस विद्रोह को सतसुमा विद्रोह के नाम से जाना जाता है। सतसुमा विद्रोह का नवनिर्मित साम्राज्यिक सेना ने सफलतापूर्वक दमन किया। विद्रोह की असफलता ने राष्ट्रीय सभा की स्थापना के लिए चल रहे आंदोलन को और बढ़ावा दिया। 1880 के दौरान 240,000 से अधिक लोगों ने औपचारिक तौर पर याचिकायें दायर कीं।

16.5 राष्ट्रीय सभा की स्थापना

बाकूहान व्यवस्था को समाप्त कर दिये जाने पर जहां एक ओर राष्ट्र को एकीकृत कर दिया गया वहीं 1872 में इवाकूरा तोमोमी के नेतृत्व में ओकूबो, इतो, इनावू, किदो जैसे सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल वैधानिक एवं राजनीतिक संस्थाओं का अध्ययन करने के लिए पश्चिमी देशों की यात्रा पर गया। यह महसूस किया गया कि यदि संस्थाओं का पुनर्गठन पश्चिमी संस्थाओं के आधार पर न किया गया तब पश्चिमी देशों द्वारा स्वीकृत की गई असमान संधियों में संशोधन करना संभव न हो सकेगा। यह प्रतिनिधि मंडल यह मानकर लौटा कि जहां एक ओर मजबूत जापान का निर्माण करने के लिए संवैधानिक सरकार का होना आवश्यक है वहां इसी के साथ-साथ पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा स्वीकृत असमान संधियों में भी संशोधन करना होगा। बहस सरकार के स्वरूप को लेकर भी और उसी के साथ-साथ राष्ट्रीय सभा की स्थापना के समय को लेकर भी थी तथा ''सार्वजनिक'' (Public) शब्द को भी परिभाषित करना था। शासक वर्ग के अंदर यह आम सहमति बनी कि कुछ लोगों द्वारा शासित सरकार की व्यवस्था को परिवर्तित किया जाना चाहिए और 1873 में स्वयं ओकूबो ने इतो से एक संविधान के प्रारूप को तैयार करने के लिए कहा।

सैगो के समर्थकों द्वारा ओकूबों की हत्या कर देने के बाद संविधान निर्माण के कार्य के लिए इतो तथा ओकूमा का मुख्य व्यक्तियों के रूप में उद्‌भव हुआ। सन् 1879 में सम्राट ने इवाकूरा की सलाह पर पार्षदों से संवैधानिक सरकार के औचित्य के लिए लिखित मतों को जमा करने के लिए कहा। जबकि सभी पार्षदों ने अपने स्मरण पत्रों में संवैधानिक सरकार के स्वरूप पर क्रमिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए आग्रह किया वहीं पर ओकूमा ने ब्रिटिश ढांचे पर आधारित संसदात्मक सरकार को तुरंत अपनाने के लिए जोर दिया। ओकूमा ने दूसरे नेताओं को उनके प्रस्तावों में अपनी असहमति के विषय में सूचित नहीं किया और सीधे-सीधे अपने प्रस्तावों को सम्राट के पास भेज दिया। इतो ने इसको विश्वासघात माना और उसने महसूस किया कि ओकूमा अपनी उग्रवादी योजना के माध्यम से जनता के समर्थन को प्राप्त करना चाहता था तथा इस तरह से वह अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने का भी इच्छुक था। ओकूमा के साथ अन्य मामलों पर भी मतभेद और गहरा हो गया। सन् 1881 में सरकार ने होक्केदो औपनिवेशी कमीशन में अपनी संपत्ति को **सतसुमा** की एक प्राइवेट कंपनी को 380,000 येन में बेचने का निर्णय किया जबकि सरकार ने इसमें एक करोड़ चालीस लाख येन निवेश किये थे। ओकूमा पर यह आरोप लगाया गया कि उसने इसकी सूचना प्रेस को दे दी। जिसके कारण यह राजनीतिक हंगामें का विषय बन गया। एक सुनिश्चित अभियान का प्रारंभ ओकूमा के मित्र फूकूजावा युकिची के द्वारा किया गया। इसलिये ओकूमा पर यह आरोप लगाया गया कि वह प्रेस के समर्थन का उपयोग कर रहा था और वह सरकार का तख्ता पलटने में रुचि रखता था और इसी कारणवश उसको 12 अक्टूबर 1881 को सरकार से बहिष्कृत कर दिया गया।

सरकार ने आम जनता के असन्तोष को शान्त करने के लिये उसी समय 1889 में संविधान निर्माण की ओर 1890 में राष्ट्रीय सभा को संगठित करने की घोषणा की। एक तरह से इतो-ओकूमा संघर्ष ने सरकार को संवैधानिक सरकार के प्रति एक प्रतिबद्धता को मानने तथा

एक सुनिश्चित तारीख की घोषणा के लिये बाध्य किया। लेकिन ओकूमा के उन प्रस्तावों को पर्याप्त समर्थन नहीं मिला जिनमें संसद के प्रति उत्तरदायी मंत्रिमण्डल के ब्रिटिश प्रारूप का आग्रह किया गया था। अब इतो का उदय जापान के संविधान के जनक के रूप में हुआ। इस संविधान को काफी सीमित रखा गया था।

इतो ने विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं का एक गहन अध्ययन करने तथा जापान की परम्परा के अनुरूप व्यवस्था की तलाश में 1882-1883 का समय ब्रिटेन, फ्रांस तथा जर्मनी में लगाया। अपने अध्ययन अभियान पर जाने से पूर्व हरमन रोज लेर के प्रभाव के अधीन इतो ने प्रशिया के संविधान के प्रारूप को अपनाने का निर्णय किया। जर्मनी में इतो को वहां के प्रसिद्ध विद्वानों की सलाह का भी लाभ प्राप्त हुआ। उन विद्वानों में रुदोइफवॉन रिनस्ट तथा लॉरेंज वॉन स्टेन प्रमुख थे। इतो ने विदेशों में जाकर अध्ययन के द्वारा स्वयं को ऐसे ज्ञान से लैस किया कि वह इसके द्वारा उन आलोचकों का सफलतापूर्वक सामना कर सका जो ब्रिटिश संविधान के प्रारूप का समर्थन करते थे।

अपने वापस लौटने पर इतो ने संविधान का अध्ययन करने के लिये एक आफिस खोला। सरकार को मजबूत करने के लिये उसने आवश्यक संस्थात्मक आधारों का निर्माण किया जिससे कि राजनीतिक दलों के द्वारा सत्ता में हिस्सेदारी करने की मांग से निबटा जा सके। हाऊस ऑफ पीस के लिये उसने जर्मन ढांचे के अनुसार सामन्तों के लिये एक नयी व्यवस्था की रचना की। यह हाऊस ऑफ पीस क्रीजोकू से लोकप्रिय मताधिकार द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों पर नियन्त्रण रख सकता था और यह उच्च सरकारी अधिकारियों तथा दूसरे महत्वपूर्ण अधिकारियों पर भी नियन्त्रण रख सकता था। यामागता ओसीतोमो की भांति इतो स्वयं काउंट बन गया। सन् 1888 में संविधान की जांच-पड़ताल करने के लिये प्रिवी कोंसिल की रचना की गई लेकिन इस कार्य को पूरा करने के बाद भी यह संस्था जारी रही और इस पर अल्पतंत्र (Oligarchy) का कड़ा नियन्त्रण कायम हो गया। मंत्रिमंडल से अलग दो मंत्रिपदों की शुरुआत की गई। ये थे – साम्राज्यिक मामलों (Imperial Household) का मंत्रालय तथा प्रिवी सील (Privy Seal) मंत्रालय (Lordkeeper) ये दोनों मंत्री अल्पतंत्र (Oligarchy) से चुने जाते थे। इन दोनों पदों की स्थापना सत्ता में आने वाले राजनीतिक दलों के प्रभाव से सामाजिक संस्थाओं को मुक्त रखने के लिये की गई थी। सामाजिक सम्पत्ति एवं भू-सम्पत्ति में काफी वृद्धि हुई थी। 1881 एवं 1890 के बीच सम्पत्ति में 6000 गुणा वृद्धि हुई थी। 1887 के आसपास उनकी सम्पत्ति स्टॉक एवं बौण्ड में 80 लाख येन के करीब जांची गई थी। इस तरह से राजस्व का यह एक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुका था और सरकार के द्वारा अपनी योजनाओं को कार्यरूप देने के लिये इसका शोषण किया जा सकता था और फिर चाहे भविष्य की संसद के द्वारा इसका विरोध भी किया जाता इस तरह के स्रोत को डायट के सीमा क्षेत्र के अन्दर नहीं लिया गया।

सन् 1885 में मन्त्रिमण्डल व्यवस्था ने **दाजोकन** का स्थान ले लिया। प्रधान मंत्री सहित इस मन्त्रिमण्डल में दस सदस्य थे और प्रधान मंत्री सम्राट के प्रति उत्तरदायी होता था। **सतसुमा** एवं **चोशू** के अन्दर चार-चार मंत्री रख कर एक नये संतुलन को कायम किया गया। इसलिये नयी व्यवस्था के अन्तर्गत भी **सतसुमा** एवं **चोशू** का प्रभुत्व बना रहा। इस नयी व्यवस्था के अधीन जनप्रिय अधिकारों के नेताओं की इस तंत्र को तोड़ने की आशायें पूर्ण न हो सकीं। नागरिक सेवा की एक नयी व्यवस्था का प्रारम्भ किया गया जिसके अनुसार कुछ पदों को छोड़ कर सम्पूर्ण नौकरशाही की परीक्षा प्रणाली के द्वारा भर्ती की जानी थी। इस तरह से यदि कोई राजनीतिक दल सत्ता में आने पर अपनी इच्छानुरूप उच्च पदों पर लोगों को नामजद करना चाहे तब वह ऐसा नहीं कर सकता था। आगे आने वाले समय में नौकरशाही अल्पतन्त्र के लिये एक परकोटा साबित हुई। इस परीक्षा प्रणाली के कारण नौकरशाही में वही लोग आ पाते थे जो सरकार द्वारा संचालित आठवीं एवं हाई स्कूलों में तथा इसी के साथ-साथ सम्मानित टोकियो विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते थे। सरकारी अधिकारियों के परम्परागत भय के साथ-साथ उनके इस अभियान के कि वे सामाजिक सेवाओं से जुड़े थे न केवल उनको प्रभुत्वसम्पन्न वर्ग बनाया बल्कि उनके अन्दर जनता के प्रति तिरस्कार की भावना और बढ़ी। इसके अतिरिक्त उच्च नौकरशाही को कानून के अन्तर्गत विशेषाधिकार प्राप्त थे और उसके लिये विशेष आमदनी वाले कानून भी थे। इस तरह से सार्वजनिक बहस के माध्यम से लिये जाने वाले निर्णयों के सिद्धान्त को संविधान के द्वारा लागू किये जाने से पूर्व ही इतो ने सरकार को काफी सुरक्षित गढ़ उपलब्ध करा दिया था।

बोध प्रश्न 2

1) सही वक्तव्य पर (√) निशान लगाइये।

अ) सभी क्षेत्रों से राजनीतिक टिप्पणियों को बढ़ावा देने के लिये 1875 में प्रेस अधिनियम को लागू किया गया।

ब) मेजी शासन के दौरान सरकारी तथ्यों की सत्यता को बनाये रखने के लिये 1875 में प्रेस अधिनियम को लागू किया गया।

स) सरकारी तथ्यों का खुलासा करने देने के कारण सरकारी अधिकारियों पर जुर्माना लागू करने के लिये प्रेस अधिनियम को लागू किया गया।

द) राजनीतिक आलोचनाओं को सीमित करने के लिये 1875 में प्रेस अधिनियम को लागू किया गया और गृह मंत्रालय से सेंसरशिप लागू करने को भी कहा गया।

2) अ) सतसुमा विद्रोह सामन्त जमींदारों के विरुद्ध था।

ब) सतसुमा विद्रोह सामन्त जमींदारों के समर्थन में था।

स) सतसुमा विद्रोह किसानों के एक समुदाय के विरुद्ध एक षड्यंत्र था।

द) सतसुमा विद्रोह सरकार के विरुद्ध था।

3) ब्रिटिश ढांचे पर आधारित ओकूमा के प्रस्तावों की असफलता पर दस पंक्तियाँ लिखिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

16.6 संविधान

इता और उसके तीन सहयोगियों इनाउ कोबाशी, केनेको कान्त्रो तथा इतो मियोजी ने 1887 की गर्मियों में संविधान के प्रारूप को अन्तिम रूप से तैयार कर दिया था। उसकी जांच रूजलर के द्वारा की गई तथा उसको प्रिवी कौंसिल को सौंप दिया गया। इतो के अधीनस्थ प्रिवी कौंसिल ने छः माह तक इस पर विचार किया। इतो का कहना था कि "संविधान के पीछे यह भावना है कि शासक के प्रभुत्व को सीमित किया जा सके तथा जनता के अधिकारों की सुरक्षा।" इसी के साथ-साथ उसने यह तर्क भी प्रस्तुत किया कि संविधान के प्रारूप को शासक के प्रभुत्व को और मज़बूत करने के लिए तैयार किया गया है। इस तरह से यह कहा जा सकता है: "मेजी संविधान आवश्यक तौर पर ऐसी ही अवधारणाओं को एकीकृत करने का प्रयास था जिनके बीच आपसी सौहार्द पैदा नहीं किया जा सकता था। ये अवधारणाएं थीं – सामाजिक निरंकुशता और लोकप्रिय सरकार।"

16.6.1 सम्राट

इतो एवं अन्य के सम्मुख यह समस्या थी कि सम्राट के स्थान को एक संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत कैसे सुनिश्चित किया जाए क्योंकि सम्राट की जड़ें जापान की ऐतिहासिक परंपरा में निहित थीं। आगे उन्होंने यह महसूस किया कि सम्राट की स्थिति को संविधान में इस प्रकार परिभाषित किया जाए कि न केवल उसके पास सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति हो अपितु उसको एक ऐसी धार्मिक भूमिका करने वाले के रूप में प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए जिसके द्वारा वह जनता के आत्मिक एवं नैतिक मूल्यों का केन्द्र बिंदु हो जाए।

इसी के साथ-साथ यह भी सहमति हुई कि सम्राट की शक्तियों का संचालन संविधान के द्वारा

किया जाना चाहिए जिससे उसके पास असीमित शक्तियाँ न रह पाएंगी। इसी कारणवश संविधान की धारा 3 में "सम्राट पवित्र एवं अनुल्लंघनीय है" और संविधान की धारा 4 में कहा गया, "सम्राट साम्राज्य का प्रमुख होने के कारण, संप्रभुता के अधिकार उसके अंतर्गत निहित हैं और वह इनका उपयोग संविधान में उल्लेखित प्रावधानों के अनुरूप ही करता है।" 11 फरवरी, 1889 को संविधान को सम्राट की ओर से जनता के लिए उपहार के रूप में उद्घोषित किया गया। 11 फरवरी साम्राज्य दिवस था, परम्परा के अनुसार सम्राट ने इसी दिन सिंहासन को प्राप्त किया था। सम्राट की निम्नलिखित शक्तियों को संविधान में शामिल किया गया:

1) सैन्य बलों का सर्वोच्च अधिकारी
2) युद्ध की घोषणा, शांति करना तथा संधियों को करने की शक्ति
3) अधिकारियों को नियुक्त करने तथा व्यापक कार्यपालिका प्रभुत्व की शक्ति
4) साम्राज्यिक डायट को बुलाने, खोलने, बंद करने, सत्रावसान करने तथा प्रतिनिधि सभा को भंग करने की शक्ति
5) जिस समय डायट विधान को पारित कर देती है तब सम्राट उसको निरस्त कर सकता था और नये अध्यादेश जारी कर सकता था
6) सभी सरकारी अधिकारी एवं मंत्रिमंडल के मंत्री सम्राट के प्रति उत्तरदायी थे, न कि डायट के प्रति।

सिंहासन के उत्तराधिकार को इम्पीरियल हाउस लॉ, साम्राज्यिक परिवार के प्रमुख उत्तराधिकारियों में से निश्चित करेगा। इम्पीरियल हाउस लॉ में संशोधनों का निर्णय सम्राट के द्वारा इम्पीरियल परिवार कौंसिल तथा प्रिवी कौंसिल की सलाह से किया जाएगा।

संविधान में राजनीतिक प्रक्रिया में जनता की हिस्सेदारी के सिद्धांत को शामिल करने के लिए किस प्रकार के तंत्रवाद को लागू किया गया?

16.6.2 डायट

डायट को दो सदनों से बनाया गया था और ये दोनों सदन **हाऊस ऑफ पीर्स** तथा प्रतिनिधि सभा थे। हाऊस ऑफ पीर्स में साम्राज्यिक परिवार के सदस्यों, सामंतों तथा सम्राट द्वारा नियुक्त किए गए व्यक्ति मनोनीत किए जाते थे। प्रतिनिधि सभा में तीन सौ सदस्य थे और उनका निर्वाचन जनता के द्वारा सीमित मताधिकार के आधार पर किया जाता था। संविधान के साथ-साथ प्रतिनिधि सभा के सदस्यों के चुनावी कानूनों को भी लागू किया गया था। मताधिकार का अधिकार केवल उन पुरुषों के पास था जो संपत्ति के मालिक थे। औसतन 2-3 हेक्टेयर से अधिक भूमि की मिल्कियत आवश्यक थी और जिनकी आयु 25 वर्ष से अधिक थी। इस तरह से 4 करोड़ की जनसंख्या में मात्र 450,000 लोगों के पास मत देने के अधिकार थे। प्रतिनिधि सभा निचला सदन था और इसके पास व्यवस्थापिका की सीमित शक्तियां थी क्योंकि सम्राट एवं हाऊस ऑफ पीर्स इसके द्वारा पारित किए गए विधान को निरस्त कर सकते थे। लेकिन डायट के सदस्यों के पास किसी भी प्रस्ताव को प्रस्तावित करने का अधिकार था। निचला सदन अर्थात् प्रतिनिधि सभा संविधान में कोई संशोधन नहीं कर सकती थी। केवल सम्राट के पास ही इस तरह का अधिकार था। डायट का सरकारी अधिकारियों के ऊपर कोई प्रभुत्व न था और बजट पर भी उसका सीमित नियंत्रण था। बजट के कुछ विशेष प्रावधानों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। यदि डायट इसको पारित करने में असफल हो जाती तब सरकार को यह अधिकार था कि वह पिछले वर्ष के बजट के प्रावधानों के आधार पर कार्य कर सकती थी। कर संबंधी बिलों पर डायट की सहमति लेना आवश्यक था। यही एकमात्र प्रावधान था जहां पर डायट में विरोधी दल कार्यपालिका पर कुछ सीमा तक नियंत्रण करने के लिए कार्यवाही कर सकते थे।

सीमित शक्तियों के बावजूद भी सरकार डायट के सहयोग के बगैर कार्यों को नहीं कर सकती थी। डायट अविश्वास के प्रस्ताव को पारित कर मंत्रीमंडल को सत्ताच्युत नहीं कर सकती थी क्योंकि मंत्रिमंडल डायट के प्रति उत्तरदायी न था। दोनों सदनों को सम्राट से प्रत्यक्ष आग्रह करने का अधिकार दिया गया था ये जनता से याचिकाओं को प्राप्त कर सकते थे। डायट के अधिवेशन का समय मात्र तीन माह क सीमित था लेकिन शाही आदेश के द्वारा इसके समय को बढ़ाया जा सकता था। अति विशेष अधिवेशनों का निर्णय भी शाही आदेश के द्वारा होता था। दोनों सदनों की कार्यवाहियों के सार्वजनिक तौर पर किया जाता था। प्रतिनिधि सभा को

प्रधान मंत्री की इच्छा पर भंग किया जा सकता था। जबकि हाऊस ऑफ पीर्स जारी रहता था, निचले सदन के सदस्यों को नवनिर्वाचित करना पड़ता था और भंग होने के पांच माह के अंदर नये सदन को बुलाना पड़ता था।

16.6.3 जनता के अधिकार

संविधान के द्वारा जनता के कुछ अधिकारों एवं स्वतंत्रताओं की गारंटी दी गई थी, लेकिन इनको ''कानून की सीमाओं'' के अंतर्गत सीमित कर दिया गया था। सरकारी अधिकारियों द्वारा किए गए गलत कार्यों को विधि की स्थायी अदालतों में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। वास्तव में जापान की जनता को सीमित अधिकार एवं स्वतंत्रता प्रदान की गई थी।

16.6.4 कार्यपालिका

ऐसे लोग जो मंत्रीगण हो सकते थे उनके लिए संविधान में कोई विशेष योग्यताओं का उल्लेख नहीं किया गया था। मंत्रीमंडल का कोई सामूहिक उत्तरदायित्व न था और प्रत्येक मंत्री सम्राट के प्रति उत्तरदायी होता था। प्रिवी कौंसिल को भी महत्वपूर्ण विषयों पर विचार करने का अधिकार दिया गया था और वह सम्राट को भी सलाह दे सकती थी। प्रिवी कौंसिल के साथ-साथ अनौपचारिक समूह जेनरो (बड़े राजनेताओं की संस्था) ऐसी संस्थाएं नहीं थीं जिनका गठन संविधान के द्वारा किया गया हो लेकिन वे मंत्रिमंडलों के निर्माण में प्रभुत्व का प्रयोग करती और सम्राट उनके द्वारा दी गयी सलाह पर अपनी सहमति प्रदान करता। कई वर्षों तक जेनरो का गठन सतसुमाचोशू समूह के सदस्यों द्वारा किया जाता था। इसी कारणवश संविधान की उद्घोषणा भी सतसुमाचोशू तंत्र के प्रभुत्व को खण्डित न कर सकी।

16.6.5 सेना

सेना प्रत्यक्ष तौर पर सम्राट के प्रति उत्तरदायी थी और संविधान में ऐसा कोई प्रावधान न था जिसके आधार पर सेना नागरिक नियंत्रण के प्रति सहायक हो। 1900 में एक साम्राज्यिक अध्यादेश द्वारा सेना को यह कहते हुए अनुबंधित किया गया कि केवल सक्रिय सेनापतियों तथा उप-सेनापतियों के साथ-साथ नौसेनापति एवं उप नौसेनापति क्रमशः युद्ध के पदों एवं नौसेना मंत्री पद को प्राप्त कर सकते थे। इस तरह से उनकी शक्तियों को बढ़ाकर मंत्रिमण्डल की शक्ति को कम कर दिया गया। सैनिक अधिकारीगण उनकी नीतियों का विरोध अपने पदों को छोड़ कर कर सकते थे।

16.6.6 न्यायपालिका

संविधान के अतंर्गत जो वैधानिक व्यवस्था उत्पन्न हुई उसको ''कानून के द्वारा शासन'' कह कर परिभाषित किया गया न कि ''कानून का शासन'' कह कर। अदालतों के एक पदानुक्रम में लघु नीति अदालतों, जिला अदालतों, स्थानीय अदालतों, अपील अदालतों तथा ठहराव की अदालतों की स्थापना की गई। इन ठहराव की अदालतों में छोटी अदालतों से दायर किए मुकदमों पर कानूनी बिंदुओं पर विचार किया जाता था। मुकदमें की कार्यवाही सार्वजनिक तौर पर होती थी, लेकिन जब किसी मामले को कानून व्यवस्था के लिए न्यायपूर्व समझा जाता था तब मुकदमें की सार्वजनिक कार्यवाही को निरस्त कर दिया जाता। एक अलग अदालती व्यवस्था (प्रशासनिक मुकदमों की अदालत) प्रशासनिक अधिकारियों के शामिल होने वाले मामलों का निपटारा करने के लिए स्थापित की गई। इसका तात्पर्य यह था कि प्रशासनिक गलतियों को कानून की परिधि के अंदर नहीं लाया जा सकता था।

16.6.7 संविधान का कार्य

मेजी संवैधानिक व्यवस्था ने सम्राट को अनेक विशेषाधिकार प्रदान किए थे किंतु परिपाटी के कारण वह इन शक्तियों का उपयोग अपनी स्वयं की इच्छा के अनुरूप नहीं कर सकता था। उसको राज्य के मंत्री एव साम्राज्यिकी डायट की सलाह पर निर्भर रहना पड़ता था। मंत्री परिषद, डायट, सेना, प्रिवी कौंसिल जैसी राज्य की संस्थाओं का अस्तित्व कुल मिलाकर स्वतंत्र था। ये संस्थाएं सम्राट के माध्यम से एकीकृत स्वरूप ग्रहण कर चुकी थीं और सम्राट अपनी व्यक्तिगत इच्छा के आधार पर अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकता था। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय सरकार के सरल संचालन के हित में बहुत सी संस्थाओं के बीच पारस्परिक सहयोग एवं सौहार्द बनाये रखना अति आवश्यक था। मेजी शासन के दौरान जेनरो (बड़े राजनेनाओं की संस्था) ने सम्राट के नाम पर उसके कार्यों को संयुक्त रूप से संपन्न किया। लेकिन 1910 से जेनरो के पतन के कारण शक्ति विसर्जन की खामियां स्पष्ट

होने लगी। बाद में बहुत से शक्ति केन्द्रों के बीच संघर्ष होने लगे। यदि शक्ति का विसर्जन किया गया था तब उत्तरदायित्व का भी विसर्जन होना चाहिए था लेकिन सम्राट को प्रत्यक्ष तौर पर उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता था और इसी कारण से "गैर-उत्तरदायित्व" की व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ।

लोकप्रिय अधिकारों के समूह ने मेजी संविधान के प्रति समर्थन का दृष्टिकोण दिखाया क्योंकि इसके द्वारा दलीय मंत्रिपरिषद से इंकार नहीं किया गया था।

डायट में सार्वजनिक बहस के कारण सदस्यगण सरकार की बहुत सी नीतियों एवं प्रशासनिक कार्यवाही के बारे में जनता को सूचित करने में सफलता प्राप्त कर सके। यद्यपि डायट सरकार का तख्ता नहीं पलट सकती थी फिर भी यह जनता की दृष्टि में मंत्रियों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकती थी एवं सहयोग करने से इंकार करके सरकार को परेशानी में डाल सकती थी। इस तरह से जहाँ डायट को प्रारंभ में अल्पशासन तंत्र के द्वारा एक आवश्यक आपत्तिजनक वस्तु माना जाता था, वहीं अब इसका अधिक महत्व हो गया और इसी कारणवश 1900 में इतो हिरोबूमि स्वयं एक राजनीतिक दल की स्थापना की ओर अग्रसर हुआ। सम्राट को प्रत्यक्ष तौर पर मांग-पत्र देने के अधिकार का उपयोग डायट के सदस्यों द्वारा मंत्रिपरिषद को सेंसर करने के लिये 1892 में उस समय किया गया जबकि मंत्रियों ने उनके विचारों की ओर ध्यान नहीं दिया। लेकिन सम्राट ने मंत्रिपरिषद तथा डायट के सदस्यों को अपने मतभेदों को केवल दूर करने को कहा। दिसम्बर 1893 में डायट के सदस्यों ने सम्राट को प्रधान मंत्री इतो को बर्खास्त करने का प्रस्ताव भेजा। प्रिवी कौंसिल ने सम्राट की ओर से जवाब देते हुए बयान जारी किया "प्रधान मंत्री के त्याग पत्र के संबंध में, मैं बाहरी हस्तक्षेप नहीं सुनूंगा।"

जापान में संवैधानिक सरकार के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान अलग-अलग चार मंत्रिमण्डल बने और तीन बार चुनाव हुए। निचले सदन के बार-बार भंग होने और आम चुनावों के दौरान हिंसा होने से जहां एक ओर डायट पर नियंत्रण करने के लिये संघर्ष के संकेत स्पष्ट होते हैं वहीं पर डायट के सदस्यगण राजनीतिक चतुरता में कमजोर पड़ने लगे और वे प्रभावहीन हो गये। दलों ने डायट के अन्दर यह दृढ़ निश्चय किया कि सरकार पर नियंत्रण स्थापित न कर पाने की स्थिति में जब कभी भी सम्भव होगा वे सरकार के कार्यों में बाधा पहुंचायेंगे। लेकिन 1894 में चीन-जापान युद्ध के समय शासकों के अल्प तंत्र एवं डायट सदस्यों के बीच के मतभेद लुप्त हो गये।

संविधान ने जनता को शासित जन (Subjects) कहकर उद्धृत किया और उनके अधिकारों की तुलना में कर्तव्यों पर अधिक बल दिया। मताधिकार के लिये सम्पत्ति की योग्यता कर देने से प्रतिनिधि सभा में प्रबुद्ध वर्ग को ही प्रतिनिधित्व मिल पाया। और उन्होंने शान्ति संबंधी कानून बनाये जिससे जनता की स्वतन्त्रता और भी सीमित हो गई। जापान के संविधान निर्माता वास्तव में लोकतन्त्र को लागू करने की इच्छा नहीं रखते थे। इसीलिये रॉबर्ट ए. स्कैलपिनो के अनुसार इन प्रारंभिक प्रयासों को असफल नहीं माना जा सकता। वास्तविकता में ये प्रयास लोकतंत्र की स्थापना के लिये थे ही नहीं। वे एक ऐसी एकीकृत मजबूत सरकार को चाहते थे जो "धनी राष्ट्र एवं शक्तिशाली सेना" के निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आम जनता की हिस्सेदारी को सीमित रखा गया। लेकिन फिर भी मताधिकारी के विस्तार का मार्ग खोल दिया गया था और इस प्रक्रिया की अन्तिम परिणिति 1925 में प्रदान किये गये पूर्ण व्यस्क पुरुष मताधिकार के रूप में हुई।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित कथनों में से किसी एक पर सही (√) का चिन्ह लगाइये:

   अ) मेजी संविधान में वास्तव में शासक की शक्ति को कम करने का प्रयास था।

   ब) मेजी संविधान शासक के स्तर को समाज में सुधारने का एक प्रयास मात्र था।

   स) मेजी संविधान जहां एक ओर शासक के प्रभुत्व को सीमित करने का एक प्रयास था वहीं पर दूसरे तरह से शासक के प्रभुत्व को मजबूत करने का भी।

   द) मेजी संविधान शासक की शक्ति एवं प्रभुत्व को सीमित करने का प्रयास था।

2) अ) जापान की डायट के अन्दर दो सदन थे — एक निचला सदन — प्रतिनिधि सभा और दूसरा हाऊस ऑफ पीर्स।

ब) जापान की डायट के अन्दर तीन सदन थे – सीनेट, प्रतिनिधि सभा तथा हाउस ऑफ कॉमन्स।

स) डायट का निर्माण एक मात्र विधान के द्वारा हुआ।

द) डायट के अन्दर दो सदन थे – हाउस ऑफ नोबल्स एवं हाउस ऑफ पीर्स।

3) अ) संविधान के अन्तर्गत वैधानिक व्यवस्था की उत्पत्ति "विधि के द्वारा शासन" जैसी परिभाषित शब्दावली के रूप में हुई।

ब) संविधान के अन्तर्गत वैधानिक व्यवस्था का उद्‌भव "विधि का शासन" जैसी परिभाषित शब्दावली के रूप में हुई।

स) संविधान के अन्तर्गत वैधानिक व्यवस्था का उदभव "विधि के विरुद्ध शासन" जैसी परिभाषित शब्दावली के रूप में हुआ।

द) संविधान के अन्तर्गत वैधानिक व्यवस्था का उद्‌भव "विधि के साथ शासन" जैसी परिभाषित शब्दावली के रूप में हुआ।

16.7 सारांश

हान की समाप्ति से एक केन्द्रीकृत प्रशासन के अधीन एक एकीकृत राष्ट्र राज्य अस्तित्व में आया। इस कार्य को अन्जाम एक सीमित एवं नियन्त्रित हिंसा के द्वारा किया गया। लेकिन केन्द्र में सतसुमा-चोशू वंशों के द्वारा राज सत्ता पर एकाधिकार करने के प्रयास और वंचित करने की प्रवृत्ति के साथ-साथ नीतियों को निर्देशित करने के कारण ऐसे गृह युद्ध एवं दंगों का प्रारम्भ हुआ जो सामुराइ के विशेषाधिकारों को समाप्त करना चाहता था। इन दंगों पर 1877 के आस-पास नवीन प्रशिक्षित साम्राज्यिकी सेना ने नियन्त्रण कर लिया। लोकप्रिय अधिकारों के आंदोलन को उन नेताओं ने नेतृत्व प्रदान किया जिन्होंने राजनीतिक प्रक्रिया में प्रतिनिधित्व की मांग को लेकर सरकार का परित्याग कर दिया था। जहां एक ओर शासन तन्त्र ने संविधान के निर्माण के कार्य का प्रारम्भ किया वहीं पर लोकप्रिय आंदोलन ने इस प्रक्रिया को और तीव्र कर दिया।

संविधान का निर्माण गुप्त रूप से इतो हिरो बूमि के नेतृत्व में किया गया और "साम्राज्यिक निरंकुशतावाद तथा लोकप्रिय सरकार" दोनों प्रकार की अवधारणाओं को शामिल करने का प्रयास किया गया। मेजी नेताओं का उद्‌देश्य एक ऐसी सरकार की स्थापना करना था जो "धनी राष्ट्र तथा शक्तिशाली सेना" के निर्माण में योगदान कर सके। उनका उद्‌देश्य किसी ऐसी सरकार की स्थापना करना नहीं था जो जनता की इच्छा का प्रतिबिम्ब हो और न ही ऐसी सरकार की जो जनता के अधिकारों एवं स्वतन्त्रता की गारन्टी देती हो। फिर भी एक सीमित हिस्सेदारी को सुनिश्चित करने वाले संविधान की घोषणा ने भविष्य में पूर्ण हिस्सेदारी करने की आशाओं के द्वार खोल दिये थे। संविधान को पश्चिमी शक्तियों से मान्यता प्राप्त करने की दिशा में एक कदम समझा गया क्योंकि वे पश्चिमी शक्तियों से मान्यता प्राप्त लिये एक समान स्तर को प्राप्त करने के इच्छुक थे।

16.8 शब्दावली

अल्पतन्त्र (Oligarchy): कुछ लोगों का शासन।

वंशावली: परिवार के पूर्वज।

16.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) द)

2) स)

3) हान की सभी प्रकार की भूमि के समर्पण की प्रक्रिया को 1870 के आस-पास पूरा कर लिया गया था। उनके मस्तिष्क में यह भय था कि यदि वे सम्राट को अपनी भूमि का समर्पण नहीं करते तब उनको सम्राट के प्रति गैरजिम्मेदार समझा जायेगा। मेजी सरकार का मुख्य उद्देश्य सरकार को जिला अधिकारियों के द्वारा हटा कर उस पर केन्द्रीय सरकार का प्रत्यक्ष नियन्त्रण स्थापित करना था।

बोध प्रश्न 2

1) द)

2) स)

3) ओकूमा ने दूसरे नेताओं को इस विषय में सूचित नहीं किया कि उसने उनके प्रस्ताव में अपने भिन्न मत को जोड़ दिया था और उसने अपने मांग-पत्र को सम्राट के पास जमा कर दिया। इतो ने इस पर गम्भीर चिन्ता की और इस तरह से संघर्ष प्रारम्भ हुआ। आप अपने उत्तर का आधार भाग 16.5 को बनायें।

बोध प्रश्न 3

1) स)

2) अ)

3) अ)